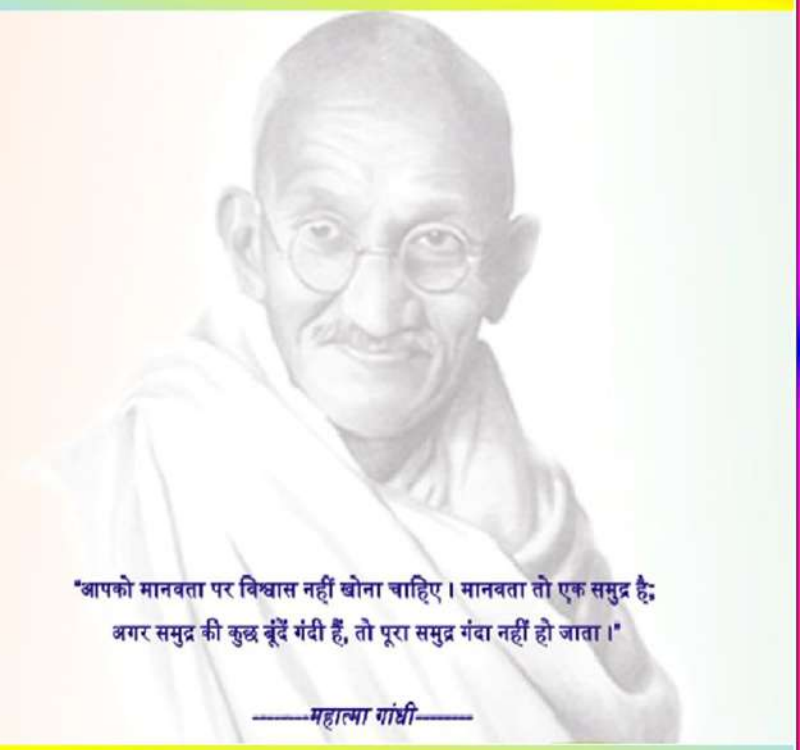

"आपको मानवता पर विश्वास नहीं खोना चाहिए। मानवता तो एक समुद्र है;
अगर समुद्र की कुछ बूंदें गंदी हैं, तो पूरा समुद्र गंदा नहीं हो जाता।"

———महात्मा गांधी———

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

कलकल

2019

आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र

हैदराबाद–500039, तेलंगाना

अक्षय ऊर्जा

(श्रीमती शैलबाला खण्डूरी, मानचित्रकार ग्रेड़- III, ते. एवं ए. पी. जी. डी. सी, हैदराबाद)

किसी भी कल कारखाने या वाहन को चलाने या उसको शाक्ति प्रदान करने के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है । दूसरे शब्दों में कहे तो यह इस प्रकार होगा कि ऊर्जा के परम्परागत स्त्रोत जैसे पेट्रोल, कोयला, तेल आदि के भण्डार सीमित हैं और संसार में इनकी अत्याधिक माँग के कारण ये साधन धीरे-धीरे समाप्ति के कगार की ओर पहुँच रहे हैं साथ ही इनसे पर्यावरण प्रदूषण भी बढ़ता जा रहा है । आज सा ऊदी जैसे देश जिनके पास तेल और गैस के अक्षय भण्डार हैं वे भी वैकल्पिक साधनों की खोज में जुटे हैं, पिछले तीन दशकों से वैज्ञानिक ऐसे ऊर्जा स्त्रोतों की खोज में जुटे हैं जिनसे पर्यावरण को न्यूनतम हानि पहुँचे और वे समाप्त भी न हो । उपाय खोजते- खोजते मनुष्य के कदम पुनः प्रकृति की ओर ही मुड़ गए हैं ।

हरित ऊर्जा की अक्षय ऊर्जा वही ऊर्जा है जो हमें प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त होती है, अक्षय ऊर्जा को नवीकरण ऊर्जा भी कहा जा सकता है । वास्तव में हरित ऊर्जा प्राकृतिक अक्षय ऊर्जा स्त्रोत जैसे सूर्य, पवन, भूगर्भ और पादपों से उत्पन्न की जाती है । हरित ऊर्जा पर्यावरण के अनुकूल है । ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन से अनेक प्रतिकूल प्रभाव धरती पर हो रहे हैं । इसे रोकने के लिए आवश्यक है कि प्रदूषण पर किसी भी प्रकार से रोक लगायी जाए, जिसमें हरित ऊर्जा सहायक है ।

वर्तमान में लगातार बढ़ रही जनसंख्या और औद्योगिकीकरण, के कारण ऊर्जा की मांग बढ़ती जा रही है । विश्व की उन्नति और गतिशीलता ऊर्जा पर ही निर्भर करती है ऊर्जा के अभाव में ये सारी गतिविधियाँ ठप्प पड़ जाएँगी । ऊर्जा स्त्रोतों के अंधाधुंध उपयोग से इनके भण्डार जल्दी ही समाप्त हो जाएंगे । फलस्वरूप परमपरागत ईंधन जैसे कायला, पेट्रोल, तेल, गैस आदि के भण्डार समाप्ति की कगार तक पहुंचने वाले हैं ।

इस बढ़ती मांग की पूर्ति यदि अक्षय ऊर्जा से हो सके तो पर्यावरण में प्रदूषण अपेक्षाकृत कम होगा साथ ही मानव स्वास्थय में भी सुधार होगा । इसलिए संसार के वैज्ञानिक वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोतों की खोज में जुट गए है । पिछले तीस वर्षों से इस क्षेत्र में काफी प्रयास हुए हैं । इन पर अनुसंधान किए जा रहे है ताकि विश्व ऊर्जा के परंपरागत स्त्रोतों पर कम निर्भर हो । अक्षय ऊर्जा को ही हरित ऊर्जा कहा जा रहा है ।

हरित ऊर्जा ही ऊर्जा का वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोज है जिससे संसार को सुचारू से चलाने व साफ रखने हेतु सरकार और विभिन्न अंतराष्ट्रीय संगठनों द्वारा अंतर्राष्ट्रीय दबाव भी बनाया जा रहा है कि वे परंपरागत ऊर्जा स्त्रोतों से हटकर वैकल्पिक साधनों का अधिक प्रयोग करें ताकि पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सके । अब वैज्ञानिकों ने ऊर्जा के नए स्त्रोत जैसे सौर ऊर्जा, वायु ऊर्जा, जल ऊर्जा, ज्वार भाटा, जल तरंग तथा बायोगैस से उत्पन्न ऊर्जा के कुछ ऐसे स्त्रोत खोज निकाले हैं, जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अनन्तकाल तक रहेंगे । परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत की अपेक्षा ये साधन सस्ते है और इसके रखरखाव की लागत भी कम रहेगी ।

ऊर्जा के वैकल्पिक स्त्रोतों में सौर ऊर्जा, सबसे बड़ा स्त्रोत है । देश के विकास में पिछले कई वर्षों से सौर ऊर्जा का प्रयोग अनेक तरह से किया जा रहा है। भारत में सौर ऊर्जा हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन सरकारी स्तर पर ऊर्जा मंत्रालय द्वारा किया जाता है, सौर ऊर्जा से बिजली बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण सफलता हासिल हुई है, औद्योगिक क्षेत्रों में ही नहीं अपितु घरों में सोलार हीटर, गीजर और सोलार कुकर आदि

का प्रयोग भी बढ़ा है। भारत में सौर ऊर्जा की अपार सम्भावनाएं हैं अतः विदेशी कम्पनियां भी इस क्षेत्र में निवेश करने की इच्छुक है।

पवन ऊर्जा,अक्षय ऊर्जा का दूसरा प्रमुख स्त्रोत है। भारत में काफी ऐसे स्थान हैं जहां पहाड़ और रेगिस्तान हैं और वहां हवा का बहाव काफी तेज रहता है। धरती के खुले हवादार स्थानों पर पवन चक्कियों द्वारा हवा के माध्यम से बिजली बनायी जाती है, ऐसा माना जाता है कि पवन ऊर्जा से बिजली बनाने में भारत का विश्व में चौथा स्थान है। राष्ट्रीय ऑफशोर पवन ऊर्जा नीति के तहत ऊर्जा के प्लांट आफशोर यानि समुद्री सीमा से संलग्न 200 नॉटिक्ल्स मील के भीतर समुद्र में लगाए जाने है। जिनमें पवन ऊर्जा प्राप्त होती है। पवन ऊर्जा को एक अति विकसित कम लगत वाला और अक्षय ऊर्जा प्रौद्योगिकी के रूप में मान्यता प्राप्त है और इसके विकास की अपार संभावनाएं हैं।

जल ऊर्जा भी अक्षय ऊर्जा का एक प्रमुख स्त्रोत है। नदियों के बहते पानी को बांध द्वारा रोककर और उसके बहाव का उपयोग करते हुए टर्बाइनों को चलाकर जल विद्युत उत्पन्न की जाती है। पम्प्ड -स्टोरेज – हाइड्रोपावर और रन – ऑफ रिवर हाइड्रोपावर इसके दो मुख्य तरीके है, जिनसे जल विद्युत परियोजनाओं द्वारा विद्युत का उत्पादन होता है। जल चक्र से उत्पन्न बिजली को जल विद्युत कहा जाता है। भारत में जल विद्युत पन बिजली के नाम से अधिक जानी जाती है।

सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा की तरह बायोगैस भी अक्षय ऊर्जा का एक प्रमुख स्त्रोत है। बायोगैस स्थानीय उपलब्ध कच्चे पदार्थों, कृषि अवशिष्ट जानवरों के गोबर आदि से बनायी जाती है। विशेषकर गांवों में बायोगैस उत्पाद के सभी आवश्यक कच्चे पदार्थ प्रचुर मात्रा में मिल जाते हैं इसलिए इसका प्रयोग सदुपयोगी है, बायोगैस के कारण लकड़ी की बचत होती है, यह प्रदूषण को नियंत्रित करती है।

पृथ्वी के गर्भ में – उपस्थित खनिजों के रेडियो धर्मी क्षय और भू-सतह द्वारा अवशोषित और ऊर्जा के कारण भारी मात्रा में भू- तापीय ऊर्जा बनायी जा सकती है। इस भू-तापीय ऊर्जा में मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने की असीम क्षमता है किंतु इसके दोहन के उपाय अपेक्षाकृत मँहगे है।

इस प्रकार भविष्य में होने वाले ऊर्जा के अभाव को दूर करने के लिए अनेक समाधान ढूंढ लिए गए है। परम्परागत ऊर्जा स्त्रोत यदि समाप्त भी हो जाए तो भी ऊर्जा संकट का समाधान हमारे पास है। सौर ऊर्जा और अन्य वैकल्पिक ऊर्जा स्त्रोत अनंत काल तक मानव के विकास प्रक्रिया में सांझेदार रहेंगे। जब तक सूर्य में प्रकाश व उष्मा मिलती रहेगी, सौर ऊर्जा का उपयोग किया जा सकेगा। किंतु लोग इन विकल्पों पर अभी पूर्ण विश्वास नहीं कर पा रहे हैं क्योंकि वर्षों से परंपरागत ऊर्जा स्त्रोतों के उपयोग की आदत पड़ गयी है और उनसे भावात्मक जुड़ाव हो गया है। हर नई तकनीक की शुरूआत में ऐसी ही समस्याएं आती है किंतु यह तय है कि भविष्य के लिए अक्षय ऊर्जा या हरित ऊर्जा ही एक मात्र विकल्प है।

अंतरमन की चैतन्य से कैवल्य की प्राप्ति

(श्री एन. बलराम स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक)

वेदों में कस्तूरी हिरण का व्याखान किया जाता है। एक खास ऋतु परिवर्तन के समय उसकी नाभि से सुगंधित कस्तूरी तरल पदार्थ का स्राव होता है। यह इतना महकदार होता है कि कस्तूरी हिरण को समझ नहीं आता कि यह दिव्य पदार्थ उसके नाभि में ही मौजूद है। बेचारा उसकी खोज में सारा जंगल भटककर ऐसे जगह पहुंच जाता है कि बाघ या शेर की बलि चढ़ जाता है।

मनुष्य की भी यही प्रवृत्ति है। उसकी अंतरात्मा को पहचाने बिना ही भगवान के खोज में कई तीर्थ यात्राओं में व्यर्थ ही भटकते रहता है। बेमतलब ही समय एवं पैसों को बरबाद करता रहता है। सही मायने में इन तीर्थ यात्राओं से कोई आध्यात्मिक लाभ तो नहीं है।

एक बार कुरुक्षेत्र युद्ध की समाप्ति के पश्चात पांडवों ने भी तीर्थ यात्रा को निकलने का मन बनाकर श्रीकृष्ण को भी भगवान के बजाय साधारण मानव की भांति यात्रा में शामिल होने का आग्रह किया । साक्षात भगवान श्रीकृष्ण को यात्रा का वजूद क्या होगा । फिर यह बात मायामोहित पांडवों को तात्पर्य कुछ समझ नहीं आया। तब भगवान श्रीकृष्ण ने यात्रा में शामिल पांडवों को मुस्कुराते हुए एक ककड़ी हाथ में दे उनसे कहा , 'अच्छा , एक काम करो। जिस जगह भी यात्रा में जाओ, नदी में स्नान तो करोगे ही। स्नान करते वक्त अपने साथ मेरा स्वरूप समझ इस ककड़ी को भी नदी में डुबकी लगवा देना। ' पांडवों ने ऐसा ही कर कुछ दिनों बाद अपनी यात्रा पूरी कर लौट आये। भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों से वह ककड़ी वापस ले, उसे खाने में परोसने को कहा। कुछ देर बाद खाने के साथ ककड़ी के टुकड़ों को भी परोसा गया। भोजन शुरू हुआ। युधिष्ठिर ने एकदम से कहा,'अरे कृष्ण। इसे मत खाना। बहुत तीता है। मुंह का स्वाद बिगड़ जायेगा।' तब भगवान श्रीकृष्ण ने कहा,' जीजू। मुझे पता है। जितने भी पुण्य नदियों में इसे डुबा दिया जाय, यह तीता ककड़ी, तीता ही रहेगा ।' मतलब परोक्ष् रूप से भगवान श्रीकृष्ण ने समझा दिया कि मनुष्य जितने भी तीर्थ यात्रायें कर ले, उसमें मौलिक रूप से कोई परिवर्तन नहीं आने वाला । आध्यात्मिक जीवन में यह परम सत्य है ।

मनुष्य, को बाह्य तीर्थ यात्राओं से नहीं ,अंतर यात्राओं से हकीकत समझनी चाहिये । पूरी दुनिया की तीर्थ यात्रा कर लेने के बावजूद आध्यात्मिक विधि से मनुष्य कुछ भी हासिल नहीं कर सकता। वही अंतर गमन यात्राओं से अपने स्थान से हिले बगैर ही कैवल्य यानि ज्ञान की प्राप्ति कर सकता है । ऋषि मुनियों ने भी यही किया है । एक ही जगह स्थिर बैठकर तपस्या कर ज्ञान की सिद्धि प्राप्त की है ।

गज़ल

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

न जाने किस भंवर में जिंदगी है
ठहाके मौन हैं गायब हँसी है ।
नहीं परछाइयाँ तक साथ देती
इसी का नाम शायद बेबसी है ।
भटकती है दिशा से वो यकीनन
नदी जब भी किनारे तोड़ती है ।
चली तूफान बनकर आँधियाँ जब
परिंदो ने नयी परवाज़ की है ।
हुई है मौत जिसकी तिश्नगी में
उसीकी आँख में अब तक नमी है ।
मिलेगी कोशिशों से ही सफलता
यही हमको बड़ों ने सीख दी है ।
कहेगा सच हमेशा तल्खियों से
तभी तो आँख की वो किरकिरी है ।
'नीलम ' दुआएँ अब असर करती नहीं क्यों
हमारी ही कहीं कोई कमी है ।

रिजेक्शन के आगे जीत है.....

(श्री चरणदास गेडम, अधिकारी सर्वेक्षक)

हॉलीवुड एक्टर सिल्वेस्टर स्टैलोन को सब जानते हैं। सभी उन्हें नायक, व कामयाब अभिनेता के रूप में जानते है। लेकिन शायद ही कुछ लोग जानते होंगे कि वे फिल्मों में कदम रखने के पहले एक हजार से ज्यादा बार रिजेक्ट हुए थे। वे अभिनेता बनना चाहते थे लेकिन उन्हें बार- बार रिजेक्ट कर दिया जाता था। बार – बार प्रयास करने व रिजेक्शन से वे हारे नहीं। इसी कारण अपने समय के शानदार अभिनेता साबित हुए ।जीवन के रिजेक्शन जो सहने वाले व उसे झेलने वाला कोई भी व्यक्ति अगर यह सीख ले की रिजेक्शन ही सही अर्थों में नया अवसर है। नए अवसरों के लिए, बड़े अवसरों के लिए रिजेक्ट होना सीख लें। सफल होने वाले लोगों को यह कभी अहसास नहीं हो पाता कि रिजेक्शन जीवन को बदलने के लिए कितना जरूरी है। सभी के जीवन में सिलेक्ट व रिजेक्ट होने के अवसर मिलते हैं। अक्सर समझने में यह भूल कर जाते है कि सफल होना ही कामयाबी की तरफ बढ़ता कदम है, जब कि सच्चाई है कि रिजेक्शन के बाद ही जीवन में संभावनाएं बढ़ जाती हैं। संभावनाओं को बढ़ाने, भूख पैदा करने के लिए असफताएं बहुत ही जरूरी हैं। जो जितना तपता है, असफल होता है, हारता है अगर संतोष रखे तो कामयाबी की कहानियां भी लिख पाता है।

सचिन तेंदुलकर इस सदी के महान क्रिकेटर रहे हैं। असंख्य बार वे भी जीरो पर आउट हुए हैं। कामयाबी के बाद आपको जीरो नहीं मिलेगा, रिजेक्ट नहीं होंगे इसकी कोई गारंटी नहीं है। अप एंड डाउन ,सफलता, असफलता,सिलेक्ट होना व रिजेक्ट होना साथ – साथ चलते हैं। व्यक्ति को इन्हें स्वीकार करते हुए आगे बढ़ते रहना है।

हर रिजेक्शन व्यक्ति को कुछ न कुछ सिखा कर जाता है। सफलताएं शायद कुछ सिखाएं या न सिखाएं लेकिन असफलताएं जरूर सिखाती हैं। जब नाकामयाबियाँ सिखाती है तो गले असफलताओं को लगाइए। दुनिया में ऐसा कोई खिलाड़ी नहीं है , जो कभी हारा नहीं है। जिसे रिजेक्शन नहीं किया गया वे हारते हैं, रिजेक्ट होते है। एक दम पीछे हटते हैं, फिर छलांग लगाते हैं और चार कदम आगे बढ़ जाते हैं। चार कदम आगे बढ़ने के लिए जीतने के बजाय हारना भी सीख लीजिए। उसे सहना भी सीख लें।

<u>भौगोलिक आंकड़े संकलन के लिए ड्रोन का उपयोग</u>

(डॉ पी.के.कर,अधिकारी सर्वेक्षक)

1. परिचय:

ड्रोन अब हमारे दैनिक जीवन के सभी क्षेत्रों में बहुत लोकप्रिय है । पार्सल पहुंचाने से लेकर सुदूर क्षेत्रों में दवा की आपूर्ती करके एवं जीवन की बचत करने तक यह किसी भी उद्योग द्वारा अनदेखी नहीं की जा सकती है, यहां तक कि भू स्थानिक आंकड़ा संग्रह द्वारा भी नहीं । ड्रोन सर्वेक्षण मानचित्रण के लिए अधिकांश मानचित्रण ऐजेंसियों द्वारा अपनाई गई नवीनतम तकनीक है जिसके द्वारा कम फ्लाइंग हाइट (उड़ान की ॐचाई) एवं उच्च रिज़ॉल्यूशन पर भूमि की स्पष्ट एवं सही तस्वीरें ली जा सकती हैं।

डी जे आई फैंटम 4 प्रो

2. ड्रोन आंकड़ा का उपयोग :

ड्रोन ने बहुत ही लागत प्रभावी तरीके से एक क्षेत्र को मैप करना संभव बना दिया है, एवं उन दिनों को पीछे धकेल दिया जब उपग्रह छायाचित्र एक विकल्प था । निर्माण, कृषि, स्वास्थ्य सेवा, आपदा सहायता, खनन, बुनियादी ढांचे के निरीक्षण आदि जैसे उद्योग में ड्रोन मैपिंग और सर्वेक्षण बहुतायत में उपयोग कर रहे हैं । सटीक माप के साथ एक परियोजना क्षेत्र के स्पष्ट, सटीक छवि या 3 डी नमूना से उनके बारे में निर्णय लेने का काम आसान हो जाता है । ड्रोन का उपयोग करके मानचित्रण और सर्वेक्षण करना बहुत सरल है । अब बाजार में पेशेवर मानक ड्रोन सस्ती कीमतों पर आसानी से उपलब्ध हैं जो किसी को भी सह काम करने की सहूलियत देते हैं ।

3. ड्रोन उड़ाने के लिए कुछ दिशा निर्देश :

- उड़ान से पहले बैटरी को चार्ज किया जाना चाहिए ।
- जमीन पर हवा का वेग संतुलित रहे ।
- बारिश या बर्फ में न उड़े ।
- उड़ान का समय 35 -40 मिनट तक सीमित होना चाहिए ।
- मूल क्षेत्र के हाईलाइट बिंदु से दूर ले जाएं ।
- आवश्यक क्षेत्र को कवर करने के लिए उड़ान योजना को ठीक से कम्प्यूटर में अपलोड किया जाना चाहिए ।

4. बाजार में लोकप्रिय ड्रोन :

- डी जे आई मविक 2 जूम
- पैरट अनफ
- डी जे आई स्पार्क
- डी जे आई फैंटम 4 प्रो वि 2.0 आदि ।

5. डाटा प्रोसेसिंग के लिए सॉटवेयर :

- **Pix D – PiXD** बाजार में सबसे ज्यादा फीचर होने वाले 3 डी मैपिंग सॉफ्टवेयर पैकेज में से एक है ।
- **Context – Capture - बाजार का रियालिटी मॉडलिंग सॉफ्टवेयर, कॉन्टेक्स्ट कैप्चर आपको 3 डी रियालिटी मैप के रूप में वास्तविक –विश्व डिजिटल संदर्भ प्रदान करता है ।**
- **एजि साफ्ट**
- **ड्रोन डिप्लॉय प्रोपेलर नेटवर्क**

6. **ड्रोन तकनीक के उपयोग :**

- **स्थलाकृतिक / कैडस्ट्रल मैपिंग**
- **शिपिंग और डिलीवरी**
- **भौगोलिक मानचित्रण**
- **आपदा प्रबंधन**
- **सटीक कृषि**
- **खोज और बचाव**
- **मौसम पूर्वानुमान**
- **वन्यजीव की निगरानी**
- **कानून स्थापित करने वाली संस्था**
- **मनोरंजन आदि।**

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि ड्रोन का उपयोग करके बड़े पैमाने पर स्थलाकृतिक मानचित्रण स्पष्ट एवं सही तरीके से एवं बहुत ही कम समय के भीतर किया जा सकता है। इस प्रकार यह समय एवं परिश्रम दोनों की बचत करता है। हम यह कह सकते हैं कि धीरे धीरे पारंपरिक मानचित्रण के तरीकों को आधुनिक रूप दिया जा रहा है जो कि बहुत ही उपयोगी है एवं भविष्य में भी मानचित्रण की नई आधुनिक तकनीकों के विकास की अपार संभावनाएँ है।

यू ए वी (ड्रोन) कार्य प्रवाह

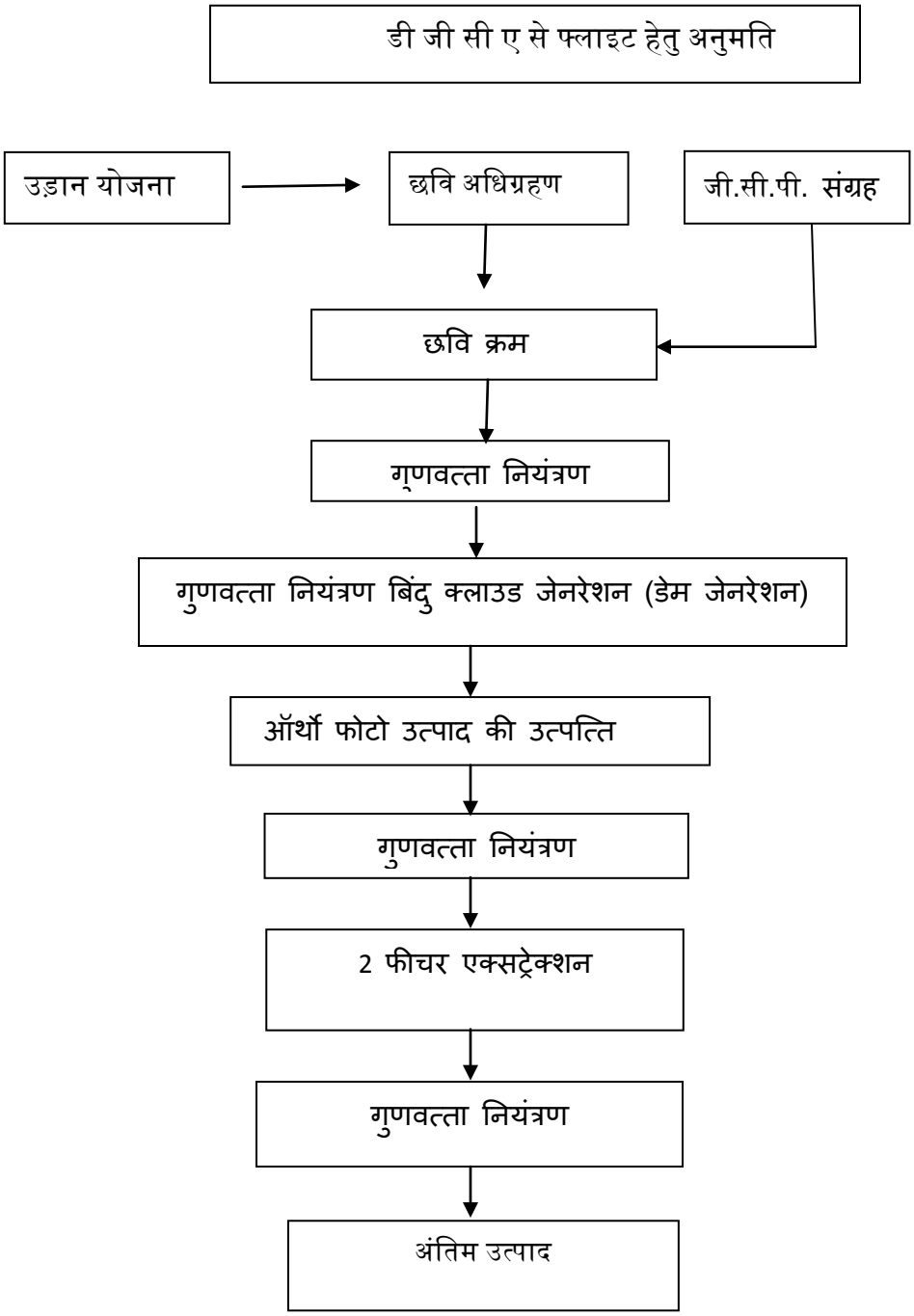

वेदना

(श्री मन्नूराम, अधिकारी सर्वेक्षक)

दिन पर दिन तू बढ़ती जाती
लोगों में यूँ दूरियाँ लाती
एक दूसरे से रूठे बैठे
फिर तुझे मनाएगा कौन ?

कटु शब्दों की बौछार से
दिल में बढ़ती दरारें
खाई सी गहरी होती जाती
इन दरारों को प्यार से भरेगा कौन ?

चुप्पी बांधे सब बैठे हैं
बातों की गाठों में उलझे
फिर इन्हें सुलझाएगा कौन ?
धैर्य अब न तुझ में है न मुझ में है:
सब अहम् में चूर बैठे
पहल की उम्मीद लिए
फिर बड़प्पन दिखाएगा कौन ?

दिन बीत जाएग, साल बीत जाएगा
पास आते-आते जमाना बीत जाएगा
बीच राह में किसी ने छोड़ दिया साथ
फिर पछताएगा कौन ?

हंसगुल्ले

(श्रीमती श्रद्धा प्रधान, अधिकारी सर्वेक्षक)

संता इंग्लिश का फैन हो गया translation की वजह से गौर फरमाए और ठहाके लगाए –

1.मैं एक आम आदमी हूँ ।

I am a mango man.

2. मुझे इंग्लिश आती हैं ।

English comes to me.

3. सड़क पर गोलियाँ चल रही हें ॥

Tablets are walking on the road.

4. मेरे पिता का नाम लाल चंद चड्डा है ।

My father’s name is red moon underwear.

एक प्रोफेसर हिंदी कक्षा में – गाली की परिभाषा बताओ ।

छात्र – अत्याधिक क्रोध आने पर. शारीरिक रूप से हिंसा न करते हुए, मौखिक रूप से की गई हिंसात्मक कार्यवाही के लिए चुने हुए शब्दों का समूह, जिसके उच्चारण के पश्चात मन को असीम शांति का अुनभव होता है, उसे गाली कहते हैं ।

प्रोफेसर छात्र से - आपके चरण कहाँ हैं , प्रभु ।

गज़ल

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

शाम को जिस वक्त खाली घर जाता हूँ मैं
अपने बच्चों की निगाहों से उतर जाता हूँ मैं ।

भूख से बेहाल हूँ इतना कि चला जाता नहीं
जाना चाहता हूँ उधर, जाने किधर जाता हूँ मैं ।

एक ठीया है शहर में हम सब जहां होते जमा
खुद को लेकिन रोज तन्हा उस डगर पाता हूँ मैं ।

जो मेरी है वो ही अब हालत शहर की हो रही
आईनों में खुद की सूरत देखकर डर जाता हूँ मैं ।

आब और सहरा में आंखें फर्क कर पाती नहीं
रेत के दरिया को भी अब तैर कर जाता हूँ मैं ।

कितना मुश्किल है जीना, सोचकर देखो कभी
इसलिए थोड़ा सा जीता और मर जाता हूँ मैं ।

अब सहा जाता नहीं जुल्मो सितम "नीलम"
दो इज़ाजत जालिमों का काट सर लाता हूँ मैं ।

<u>गई</u>

(श्री पी. यादय्या, अधिकारी सर्वेक्षक)

रोटी बन चुकी पिज्जा,

शरीरिक ताकत कम हो गई ।

फूल आ गये प्लास्टिक के,

खुशबू खत्म हो गई ।

शिक्षक बन

गया व्यापारी,

शिक्षा का मूल्य चला गया ।

चेहरे पर मेक अप,

रौनक उड़ गई ।

हिंदी धारावाहिक देख,

संस्कारें दब गई ।

मानव हो गया पैसों का गुलाम,

मानवता बिगड़ गई ।

व्यापारी हो गया दोगलेबाज,

समृद्धि चली गई ।

आइए , खुद को जानें

(श्रीमती श्रद्धा प्रधान, अधिकारी सर्वेक्षक)

- मानव शरीर 230 जगहों से मुड़ तुड़ सकता है।
- जाँघ की हड्डी कांक्रीट से भी चार गुना मजबूत होती है।
- जब, हम छींकते हैं, उस समय केवल दिल को छोड़कर पूरा शरीर काम करना बंद कर देता है।
- जीभ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मांसपेशी होती है।
- हमारे पेट में पाया जाने वाला एसिड ब्लेड को भी गला सकता है।
- पूरी जिंदगी में हम इतनी लार बनाते हैं कि दो स्वीमिंग पूल भर जाएँ।
- खुद को गुदगुदी करना नामुकिन है ।
- इंसानी शरीर से आधे घंटे में इतती गर्मी निकलती है कि 2 लीटर पानी को उबाला जा सके।
- यदि शरीर में मौजूद रक्त वाहिकाओं को आपस में जोड़ दिया जाए तो से पूरी पूथ्वी को एक बार लपेट लेगी।
- छींकने पर निकालने वाली हवा की गति 146 ft/s होती है।
- शरीर के किसी भी हिस्से के बालों की बजाय हमारे चेहरे के बाल सबसे तेजी से बढ़ते हैं।
- दिमाग दिन से ज्यादा रात में सक्रिय रहता है। इसके पीछे का कारण वैज्ञानिक भी नहीं जानते।
- पैर के नाखूनों की तुलना में हाथ के नाखून चार गुना तेजी से बढ़ते हैं।
- मनुष्य की बाहरी त्वचा ही 27 दिन में नई हो जाती है।
- जन्म के समय बच्चे सभी रंगों को नहीं देख सकते। वे केवल काला या सफेद रंग देख सकते हैं।
- साधारण मनुष्य बिना खाए 29 दिन तक रह सकता है लेकिन बिना पानी के दो दिन से ज्यादा जीवित नहीं रह सकता।
- आंखें दुनिया को उल्टा देखती हैं, लेकिन मस्तिष्क आपके लिए इसे स्वचालित रूप से सही करता है।
- हड्डियों स्टील से लगभग 5 गुना ज्यादा मजबूत होती हैं।
- मनुष्य के बालों का औसतन जीवन काल 3 से 7 साल होता है।
- हमारा दिल इतने प्रेशर के साथ खून पंप करता है कि यह खून को 30 फीट की ॐचाई तक पहुँचा सकता है।

"क्या इस दुनिया में ईश्वर है"

(श्री डी. सी. अंभोरे , अधिकारी सर्वेक्षक)

यह महत्वपूर्ण सवाल है कि जो हर एक के मन में आता है। मन की भाषा लगने की है, लोग कहते हैं कि मुझे ऐसा कुछ लगे तो मैं मानूँगा की ईश्वर है। अगर आसमान से फूल गिरे तो मुझे लगेगा कि ईश्वर है। मन को तोलने का तराजू ही गलत है, जिस पर इन्सान को कभी शंका नहीं आती। जिस तरीके से वह चाहता है, कि जिस तरीके से आप ईश्वर को देखना चाहते है, वह तरीका ही गलत है। उस तरीके से आप ईश्वर को नहीं देख सकते।

जैसे कोई अपनी आँखों पर पट्टी बाँधकर फूलों की सुंदरता देखने जाए, तो वह कैसे देखेगा ? वह अपना पत्थर लेकर बगीचे में जाएगा और हर एक फूल पर घिसकर देखेगा की यह फूल सुंदर लगता है,या नहीं। आप उसे कहेगें पहले पत्थर फैंकों अपनी आँखे खोलो, इस पत्थर से तुमने फूलों को नष्ट कर दिया है। इस तरीके से सुंदरता नहीं दिखाई देती।

आज की मनुष्य जाति इसी ढंग से ईश्वर को जानना चाहती है परंतु उसे अपनी गलती का एहसास नहीं हो रहा है। उसे यह पता नहीं है कि जिन आँखों से वह ईश्वर को देखना चाहता है उन आँखें पर गहरी मान्यताओं, गलत वृत्तियों की पट्टी बँधी है, तो वह कैसे ईश्वर को देख पाएगा ? और वह कहता है कि अगर ईश्वर है तो फिर मुझे क्यों नहीं दिख रहा है ? जिसे मैंने कभी नहीं देखा जिसे मैंने कभी जाना नहीं। उस अनदेखे पर मैं कैसा भरोसा रखूँ की वह है ?

ऐसे मनुष्य को यह बताना जरूरी है, कि जिस ढंग से वह ईश्वर को जानना चाहता है उसी ढंग से वह कभी जान नहीं पाएगा क्योंकि उसके देखने का ढंग गलत है। अगर उसे ईश्वर को ठीक ढंग से जानना है तो उसे अपने भीतर देखना होगा। अपने ही भीतर खोजना होगा।

वक्त

(श्री. एस. बाबू, अधिकारी सर्वेक्षक)

वक्त का क्या कहना
ये तो पल पल बदलता है

न तेरा है, न मेरा है

फिर भी सब कहते हैं

मेरा भी वक्त आएगा ।

वक्त से बड़ा कोई बलवान नहीं

वक्त सही तो सब सही

सब वक्त – वक्त की बात है

कोई अपना तो कोई पराया है

ये वक्त है साहब

बदलता जरूर है

धैर्य रखे संयम रखें

वक्त सब का आता है

मुझे लेख लिखने को कह रहे हैं ये

(यु. कृष्ण कुमार, अधिकारी सर्वेक्षक)

मुझे लेख लिखने को कह रहे हैं ये
मै बोला "अरे ! भाई आया है अमेरिका से ....."
और तुम मुझे लेख लिखने को कह रहे हो
उसके साथ गप्पे मारूँगा या बैठ के लेख लिखूंगा ?

वो पूछे , "अच्छा भाई आया है अमेरिका से.....
मै बोला," हाँ। वो अपने दोस्तों व बच्चों के साथ बेंगलुरू गया है lSर करने"
फिर वो बोले , तो तुम फ्री हो तो कुछ लेख लिखो।
फिर वही बात दोहरा रहे हैं हिंदी अनुभाग वाले
क्या करूँ इनसे कैसे बचूं..... ?
इस पर मैं बोला "माता जी के साथ ओनम के लिए बेंगलुरू चल रहे है प्लेन से.....

सोचा इनसे पीछा छुड़ा लूंगा ,मगर नहीं।
किसी ने सेक्शन से पूछा,"अरे भाई के साथ कहाँ -कहाँ घूमने गए ?
मैं बोला "वो अमेरिका में रहता है वो क्या इंडिया में देखेगा।

जो अमेरिका के बारे में फेंकता है
इंडिया के बारे में क्या फैंकेगा ?
दूसरों के जलते घर पर
कैसे रोटियाँ सेकेगा ?

चलिए इसी बहाने लेख न सही
एक कविता तो बन गई
इन शब्दों से हिंदी पत्रिका के लिए

दिल की दूरी

(श्री डी. सी. अंभोरे , अधिकारी सर्वेक्षक)

बात ऐसी हो की ज्जबात कम न हो
ख्यालात ऐसे हों कि कभी गम न हो
दिल के कोने में इतनी सी जगह रखना कि
खाली खाली सा लगे जब हम ना हो ।

उम्र की राह में इन्सान बदल जाता है
वक्त की आँधी में तूफान बदल जाता है
सोचा है आपको इतना याद न करें लेकिन
पलके झपकते की अरमान बदल जाता है ।

हँसने के बाद क्यों रूलाती है दुनिया
जाने के बाद क्यों बुलाती है दुनिया
जिंदगी, से क्या कुछ कसर बाकी थी
जो मरने के बाद जलाती है दुनिया ।

दिल से दिल की दूरी नहीं होती
काश कोई मजबूरी नहीं होती
आपसे मिलने की तमन्ना है, लेकिन
कहते है, हर तमन्ना पूरी नहीं होती ।

पता ही नहीं चला

(श्रीमती शैलजा रानी,आशुलिपिक)

समय चला, पर कैसे चला,
पता ही नहीं चला।
जिंदगी की आपाधापी में,
कब निकली उम्र हमारी यारों,
“पता ही नहीं चला ।“

कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे,
कब कंधे तक आ गए,
“पता ही नहीं चला ।“

किराए के घर से शुरू हुआ था सफर अपना,
कब अपने घर तक आ गए,
“पता ही नहीं चला ।“

साइकिल के पैड़ल मारते हुए हाँफते थे उस वक्त,
कब से हम कारों में घूमने लगे हैं,
“पता ही नहीं चला ।“

कभी थे जिम्मेदारी हम माँ बाप की,
कब हुए बच्चों के लिए जिम्मेदार हम,
“पता ही नहीं चला ।“

एक दौर था जब दिन में भी,
बेखबर सो जाते थे,
कब रातों की उड़ गई नींद,
“पता ही नहीं चला ।“

जिन काले घने बालों पर
इतराते थे कभी हम,
कब सफेद होना शुरू कर दिया,
“पता ही नहीं चला ।“

दर दर भटके थे नौकरी की खातिर,
कब रियाटर होने का समय आ गया,
“पता ही नहीं चला ।“

बच्चों के लिए कमाने बचाने में
इतने मशगूल हुए हम
कब बच्चे हमसे हुए दूर,
“पता ही नहीं चला ।“

भरे पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे हम,
अपने भाई बहनों पर गुमान था,
उन सब का साथ छूट गया,
कब परिवार “हम दो” पर सिमट गया ,
“पता ही नहीं चला ।“

अब सोच रहे थे कुछ अपने
लिए भी कुछ करें,
पर शरीर ने साथ देना कब बंद कर दिया,
“पता ही नहीं चला ।“

गज़ल

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

कोई हॅसके हँसाके टूट गया
कोई आसूँ बहा के टूट गया ।
मैं तो टूटा था उसकी चाहत में
वो मुझे आजमां के टूट गया ।
दिल की किस्मत भी खूब किस्मत थी
जो तेरा गम उठा के टूट गया ।
इतने चेहरे थे उनके चेहरे पर
आईना तंग आके टूट गया ।
नींद ख्वाबों के डर से टूट गई
ख्वाब 'नीलम ' पलकों में आके टूट गया ।

गीत

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

तरस रहा हृदय मेरा साथ उनका पाने को,
बहक रहे कदम मेरे, पास उनके जाने को ।
न जाने उनके जिस्म से महकती कौन गंध है,
होंठ हैं सिले- सिले, जुबान बंद-बंद है ॥

अनकहे ही कह गए नयन जिसकी बात को,
सो नहीं सकी है वो पिछली सारी रात को।
किस बात का मचा हुआ हृदय में उनके द्वन्द है
होंठ हैं सिले- सिले, जुबान बंद-बंद है ॥

मुँह से कुछ न बोलती, गीत गाती लग रही,
अपनी सारे जिस्म से, गुनगुनाती लग रही ।
समझ नहीं सका हूँ मैं, कौन सा ये छंद है,
होंठ हैं सिले- सिले, जुबान बंद-बंद है ॥

अंहकार का जवाब

(श्री एन. बलराम स्वामी, अधिकारी सर्वेक्षक)

लघुता से प्रभुता बसे,
प्रभुता से प्रभु दूर
चींटी ले शक्कर चली
हाथी के सिर धूर

सादा जीवन उच्च विचार वाले व्यक्ति पर प्रभु की सदैव कृपा होती है लेकिन जो लोग अपने आपको अधिक चालाक या शाक्तिशाली समझते हैं उनसे भक्ति बहुत ही दूर रहती है। चींटी के आगे हाथी बहुत बलवान होता है किंतु छोटी सी चींटी शक्कर की उस विशाल मिठास को पा जाती है किंतु हाथी को धूल के अलावा कुछ हासिल नहीं होता।

उपरोक्त दोहा संत कबीरदास जी की अमृत वाणी है पर इससे पहले भी युग में भगवान श्री कृष्ण ने बिना युद्ध के ही विनय/अंहकार का पाठ पढ़ाया है।

एक बार श्रीकृष्ण की सति सत्य भामा ने पूछा , " राम अवतार में सीता आपकी पत्नी थी ना ! क्या वह मुझसे भी सुन्दर थी ?"

वहीं पर मौजूद पक्षीराज गरुड़ ने भी पूछा, " प्रभु इस संसार में मुझसे भी तेज भागने वाला कोई नहीं है ना ?"

उनकी दाई हथेली पर, मौजूद सुदर्शन चक्र ने भी उतावले मन से श्री कृष्ण् ती से पूछा,' हे भगवन कई युद्धों में मैंने आपको जीत दिलवायी है। मेरे जैसा शाक्तिशाली हथियार कौन हो सकता है ?

उपरोक्त तीनों के उतावलेपन को देख श्रीकृष्ण ने दीर्घ सांस ली। फिर चिंतन कर सत्य भामा से कहा, " सत्या। तुम सीता बन जाओ। मैं राम बन जाता हूँ। हे गरूड़। तुम हनुमान के पास जाकर कहना कि श्री राम जी एवं सीता जी ने आपको बुलाया है एवं साथ लाने को कहा है । हे सुदर्शन! तुम द्वार पर जाकर पहरा देना और किसी को भी मेरी इजाजत के बिना अंदर नहीं आने देना। किसी ने भी अंदर जबर्दस्ती आने की जुर्रत की तो उसे दंडित करना "।

इस प्रकार भगवान श्री कृष्ण जी ने तीन लोगों को तीन कार्यभार सौंपे। गरुड़ ने हनुमान के पास जाकर कहा," भगवान श्री राम जी एवं सीता जी ने आपको वैकुंठ में आने को कहा है।" हनुमान खुशी से पागल हो गरुड़ से कहते हैं, ' तुम चलो। मैं आ रहा हूँ।" गरुड़ सोचता है कि यह बूढ़ा वानर कहां समय पर

पहुंचेगा और उड़ जाता है । परन्तु गरूड़ से पहले ही हनुमान को भगवान के सामने पाकर आश्चर्य चकित हो जाता है और शर्मिन्दगी महसूस करते हुए खामोश हो जाता है ।

इतने में भगवान की "हनुमान !" पुकार से हनुमान ने खुश होकर श्री राम के रूप में कृष्ण जी को देखा । भगवान ने पूछा,"क्या तुम्हें किसी ने द्वार पर नहीं रोका ? " तब हनुमान ने मुंह से सुदर्शन चक्र निकालते हुए कहा," प्रभु! इस ने मुझे आने से रोका था । जितनी बार भी गुजारिश की, नहीं सुना । तभी मैंने सोचा कि इसे मुंह में डाल लूं और आपके सामने चला आया हूँ । " फिर हनुमान की नजर राम के बगल में स्त्री (सत्यभामा) पर पड़ी और पूछा," प्रभु । यह मेरी सीता माता ही है ना ? बस इतना कहते ही अंहकार ग्रस्त सत्यभामा का चेहरा शर्म से नीचे झुक गया और श्री कृष्ण के चरणों में गिर पड़ी ।

इस प्रकार उस परमधाम वैकुंठनाथ ने एक साथ तीन के अंहकार को तोड़ा और विनम्र हनुमान का अभिनंदन किया ।

गज़ल

(डॉ. नीलम कुमार बिड़ला, अभिलेखपाल)

गमों को धुएँ में उड़ाने चला हूँ
खुशी के तराने सुनाने चला हूँ।
अंधेरे घनेरे बहुत नफरतों के
चिरागे मुहब्बत जलाने चला हूँ।
मुखों पर दिखावा दिलों में छलावा
जमीनी हकीकत बताने चला हूँ।
कदम – दर- कदम स्वार्थ छलता रहा है।
मगर फर्ज अपना निभाने चला हूँ।
इंसानियत भी तरक्की करे कुछ
नये रास्ते मैं बनाने चला हूँ।
नहीं आज शिकवा शिकायत किसी से
बुरा वक्त अपना भुलाने चला हूँ।
लगे 'नीलम ' तहज़ीब रूठी हुई है
उसे फिर बुलाने मनाने चला हूँ।

मुक्तक

तुझे मोहब्बत करना नहीं आता
मुझे मोहब्बत के सिवा कुछ नहीं आता
जिंदगी गुजारने के दो ही तरीके हैं
एक तुझे नहीं आता, एक मुझे नहीं आता ।

मुक्तक

इन्तजार की आरजू अब खो गई है
खामोशियों की आदत हो गई है
न शिकवा रहा न शिकायत किसी से
अगर है तो एक मोहब्बत
जो इन तनहाइयों से हो गई है।

<u>हिन्दी कार्यशाला की एक झलक</u>

निदेशालय में दिनांक 21/3/2018 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 22 अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

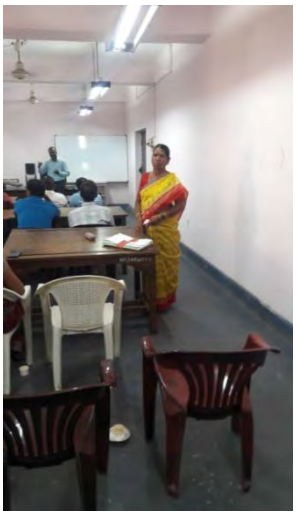

What is Drone?
Flying View of Drone
Classification of Drones
Applications of Drone
Case Study

वर्ष 2018-19 के लिए मानदेय से पुरस्कृत कर्मचारियों की सूची

क्रमसं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम
1	ए. के रथ	अधिकारी सर्वेक्षक
2	वाई. सुवर्धना	अधिकारी सर्वेक्षक
3	सी. एच. रामलिंगम	अधिकारी सर्वेक्षक
4	एस.श्रीनिवास	सर्वेक्षक
5	एस. रवि	सर्वेक्षक
6	वी.गोपाल राव	सर्वेक्षक
7	एम. एस. आर. मूर्ति	सर्वेक्षक
8	पी. एस. साम बाबू	सर्वेक्षण सहायक
9	पी. के. लूहा	मान चित्रकार ग्रेड़ -I
10	डी. रवि बाबू	सर्वेक्षण सहायक
11	एस. शीला रानी	मान चित्रकार ग्रेड़ -I
12	एन. शशि किरण	सर्वेक्षण सहायक
13	के. मधुसूदन रेड्डी	सर्वेक्षण सहायक
14	सी प्रवीणा	सहायक
15	एन. शैलजा	सहायक
16	पी. सतीश	सहायक
17	बी. चिन्ना राव	सहायक
18	शैल बाला खंडूरी	मानचित्रकारग्रेड़ -III
19	सी. आर. सी. रेड्डी	एम. टी. डी
20	एम. लक्ष्मण कुमार	प्रवर श्रेणी लिपिक
21	सी. अनिल कुमार	पटल चित्रक ग्रेड़-II
22	एम. प्रेमलता	प्रवर श्रेणी लिपिक
23	के. बाल कोटैय्या	एम.टी. एस.
24	विजय राम	एम.टी. एस.
25	बन्सी राम	एम.टी. एस.
26	जी. पद्मा	एम.टी. एस.
27	पी. हुसैन्य्या	एम.टी. एस.
28	सी. रामय्या	एम.टी. एस.

पदोन्नत कर्मचारियों की सूची

मसं	नाम श्री/ श्रीमती	पदनाम	पदोन्नति की तिथि	जिस पद पर पदोन्नत हुए
1	नीलम कुमार	अभिलेखपाल डि- II	21-12-18	अभिलेखपाल डि- I
2	सी. साम्ब शिवा राव	एम.टी.डी ग्रेड़-II	26-12-18	एम.टी.डी विशेष ग्रेड
3	वी. सुरेश	पटलचित्रक ग्रेड़ –III	01-01-19	पटलचित्रक ग्रेड़-–II
4	एम. सबीता	प्रवर श्रेणी लिपिक	01-03-19	सहायक
5	वाई. श्रीनिवास राव	सर्वेक्षक	18-03-19	अधिकारी सर्वेक्षक
6	बी. हरनाथ राव	अधीक्षक सर्वेक्षक	26-03-19	उप निदेशक
7	डी. वेंकटा रमणा	अवर श्रेणी लिपिक	12-06-19	प्रवर श्रेणी लिपिक
8	स्टिफन जॉर्ज	सर्वेक्षक	15-03-19	अधिकारी सर्वेक्षक
9	डी. सी. अंभोरे	सर्वेक्षक	18-03-19	अधिकारी सर्वेक्षक
10	पी. चिंना कोंडैय्या	एम.टी.एस.	01-04-19	पटलचित्रक ग्रेड़ –IV
11	जी. वेंकट रंगा राव	एम.टी.एस.	01-04-19	पटलचित्रक ग्रेड़ –IV
12	वाई.के. राकेश कुमार	एम.टी.एस.	01-04-19	पटलचित्रक ग्रेड़ –IV
13	पी. मिलिन्द कुमार	एम.टी.एस	01-04-19	पटलचित्रक ग्रेड़ –IV

निदेशालय में स्थानांतरण पर तैनात कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	स्टिफन जॉर्ज	सर्वेक्षक	15-03-19	टी.एन.पी एवं ए.एन.जी.डी.सी, चेन्नई	आं. प्र.भू.स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
2	डी. सी. अंभोरे	सर्वेक्षक	18-03-19	महा.एवं गोवा जी.डी.सी., पुणे	आं. प्र.भू.स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद
3	एस. चिन्ना रामय्या	प्रवर श्रेणी लिपिक	01-07-19	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद	आं. प्र.भू.स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद

नियुक्ति

स्व. श्री. एम. बाबू की पत्नी श्रीमती एम. ललिता को दिनांक 29-03-19 **से एम. टी. एस. के पद पर नियुक्त किया गया।**

निदेशालय से बाहर स्थानांतरित कर्मचारियों की सूची

क्रम सं	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	स्थानांतरण की तिथि	स्थानांतरण	
				से	को
1	के.वी. रमणामूर्ती	अधिकारी सर्वेक्षक	08-10-18	आं. प्र.भू.स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद(डी.ए.ड ब्ल्यू.वी)	जी.आई.एस. एण्ड. आर. एस, हैदराबाद
2	एम. वी. विजय कुमार	प्रवर श्रेणी लिपिक	25-02-19	आं. प्र.भू.स्था. आं.केन्द्र, हैदराबाद	जी.आई.एस. एण्ड. आर. एस, हैदराबाद
3	पी. एस. साम बाबू	सर्वेक्षण सहायक	15-05-19	आं. प्र.भू.स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद(डी.ए.ड ब्ल्यू.वी)	उड़ीसा जी डी सी., भुवनेश्वर
4.	रजिया बेगम	अवर श्रेणी लिपिक	01-07-19	आं. प्र.भू.स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद	भारतीय सर्वेक्षण एवं मानचित्रण संस्थान, हैदराबाद
5	ए. के. रथ	अधिकारी सर्वेक्षक	19-07-19	आं. प्र.भू.स्था.आं.केन्द्र, हैदराबाद	असम एवं नागालेंड जी डी सी, गौहाटी

सेवा निवृत्त/स्वैच्छिक सेवा निवृत्त हुए कर्मचारियों की सूची

क्रमसं.	नाम श्री/श्रीमती/ कुमारी	पदनाम	सेवा निवृत्ति की तिथि
1	पी. प्रकासम	खलासी	30-09-18
2	एम. राजेश्वर	अधिकारी सर्वेक्षक	31-12-18
3	डी.के. प्रधान	अधीक्षक सर्वेक्षक	31-01-19
4	एम. पेन्चलैय्या	एम.टी.डी.	31-03-19
5	रामंतु बाशा	खलासी(एम टी एस)	31-03-19
6	दिलचन्द	खलासी(एम टी एस)	30-04-19
7	बंसी राम	दफातर	30-04-19
8	एम. पार्वतीसम	अधिकारी सर्वेक्षक	31-05-19
9	दिवाकर	कनिष्ठ हिंदी अुनवादक	30-06-19
10	डी. रंगा राव	अभिलेख पाल ग्रेड़- II	30-06-19
11	पी. हुसैनय्या	एम. टी.एस.	30-06-19
12	वाई. मणीक्यम्मा	एम. टी.एस.	31-07-19

<u>मनोरंजन क्लब का वार्षिकोत्सव</u>

आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना जीडी सी के मनोरंजन क्लब की नयी कार्यकारिणी मंडल का गठन अप्रैल 2018 को हुआ । गठन के बाद से ही मंडल के द्वारा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों व गतिविधियों का आयोजन किया गया जिनका विवरण निम्नानुसार है ।

- कार्यकारिणी मंडल की बैठक -3
- योग दिवस आयोजन – 1
- मिलन समारोह -1
- विदाई समारोह-8
- (कुल 16 लोगों की सेवानिवृत्ति हुई जिनमें अधीक्षक सर्वेक्षक -1, अधिकारी सर्वेक्षक-3, सर्वेक्षण सहायक -2, अभिलेखपाल -1, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक .।, एम.टी. डी. -1, एम.टी. एस-1)

इसके साथ ही सम्मेलन भवन के चारों ओर हरियाली बढ़ाने व पर्यावरण को अधिक स्वच्छ बनाने के उद्देश्य से " प्रति व्यक्ति, प्रति वृक्ष " की तर्ज पर प्रत्येक सेवानिवृत्त सदस्य द्वारा वृक्षारोपण का आयोजन करवाया गया ताकि उनकी स्मृति वृक्षों के रूप में इस प्रांगण में सदैव मौजूद रहे एवं पर्यावरण का भी हित हो सके ।

आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना जी डी सी का मनोरंजन क्लब, केंद्रीय मनोरंजन क्लब की विभिन्न गतिविधियों एवं आयोजनों में भी सदैव अग्रसर रहा है । हमारे मनोरंजन क्लब के द्वारा केंद्रीय मनोरंजन के द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं वार्षिक दिवस समारोह में भी भरपूर योगदान दिया गया ।

केंद्रीय मनोरंजन क्लब के द्वारा आयोजनों के अंतर्गत, बैडमिंटन, टेनीकॉइट (महिला) एवं टग ऑफ वार के आयोजन का उत्तरदायित्व हमारे क्लब को सौंपा गया था जिसका सफलतापूर्वक आयोजन हमारे द्वारा किया गया ।

हमारे क्लब की विभिन्न प्रतियोगिताओं का समापन अप्रैल 2019 को हो गया, परंतु चुनाव व केंद्रीय मनोरंजन क्लब के अन्य खेल कार्यक्रमों के आयोजन के कारण,से वार्षिक दिवस का आयोजन अप्रैल में संभव नहीं हो पाया ।

हमारे सभी सदस्यों ने इस बार आयोजित खेल प्रतियोगिताओं में पूरे जोश एवं उत्साह के बढ़ चढ़कर भाग लिया । मुख्य रूप से महिलाओं के लिए आयोजित टग ऑफ वार, जिसका सुझाव हमारी सह सचिव श्रीमती श्रद्धा प्रधान ने दिया, उसका अनुमोदन करते हुए निदेशक महोदय

श्री पी. वी. श्रीनिवास द्वारा प्रांरभ किया गया। अत्यंत मनोरंजक एवं सभी महिला प्रतिभागियों ने साबित कर दिखाया कि नारी शक्ति में, " सचमुच बहुत शक्ति है "।

केंद्रीय मनोरंजन क्लब की खेल प्रतियोगिता 2019-20 में आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना जी डी सी, क्रिकेट, वॉलीबाल एवं बैडमिंटन (महिला) में विजेता रहा जो कि हमारे लिए अत्यंत गर्व एवं हर्ष का विषय है।

भारतीय महासर्वेक्षक कार्यालय की ओर से वर्ष 2018-19 के लिए रू. 17250/- का अनुदान प्रदान किया गया ।

किताबें मनुष्य की सबसे अच्छी मित्र होती हैं इसलिए पुस्तकालय का गठन किया गया है ताकि सभी सदस्य किताबों के द्वारा अपना बौद्धिक विकास एवं मनोरंजन कर सकें। पुस्तकालय में उपलब्ध किताबों एवं समाचार पत्रों का विवरण निम्नलिखित है-

पत्रिकाएं (क्लब की ओर से)

- आंध्रभूमि (तेलगु साप्ताहिक)
- इंडिया टुडे(अंग्रेजी साप्ताहिक)
- गृह शोभा(हिंदी पाक्षिक)
- वुमेन्स इरा (अंग्रेजी पाक्षिक)

पत्रिकाएं (कार्यालय की ओर से)

- साइंस रिपोर्टर (अंग्रेजी मासिक)
- योजना(अंग्रेजी मासिक)

समाचार पत्र (क्लब की ओर से)

- ईनाडु
- नमस्ते तेलंगाना

समाचार पत्र (कार्यालय की ओर से)

- डेक्कन क्रोनिकल
- हिन्दी मिलाप

मनोरंजन क्लब की वर्ष 2018-20 की कार्यकारिणी

1	अध्यक्ष	श्री पी. वी. श्रीनिवास
2	सचिव	श्री वी. सुरेश
3	संयुक्त सचिव -I	श्री ओ. प्रवीण कुमार
4	संयुक्त सचिव- II	श्रीमती श्रद्धा प्रधान
5	खेल सचिव	श्री एस. श्रीनिवास
6	सहायक खेल सचिव	श्री पी. शेखर बाबू
7	संयोजक सचिव	श्री सय्यद इद्रिस
8	पुस्तकालय अध्यक्ष	कुमारी बी. रशिला
9	सहायक पुस्तकालय अध्यक्ष	श्रीमती जी. लता
10	कोषाध्यक्ष	श्री वी. राजकुमार
11	सांस्कृतिक सचिव	श्री एम. सूवारथैय्या
12	एम टी डी प्रतिनिधि	श्री सी.एच. साम्बशिवा राव
13	ग्रुप 'सी' प्रतिनिधि	श्री एन.सदानंद
14	(पूर्ववर्ती ग्रुप 'डी')	श्री एम. रमेशबाबू

वर्ष 2018-19 के लिए आंतरिक खेल

पुरस्कार विजेता

कैरम		
खेल	**प्रथम पुरस्कार**	**द्वितीय पुरस्कार**
पुरुष सिंगल्स	श्री चंद्रपाल	श्री सय्यद इदरिस
पुरुष डबल्स	श्री पी. रवि कान्त एवं श्री. डी. नरसिंहा	श्री सय्यद इदरिस एवं श्री सी. अनिल कुमार
महिला सिंगल्स	श्रीमती जी. शीला रानी	श्रीमती एस.के. मीना
महिला डबल्स	श्रीमती बी. एस. वी. वरलक्ष्मी एवं श्रीमती जे. कनकलक्ष्मी	श्रीमती एस. के. मीना एवं श्रीमती एस. कविता
टेनीकॉइट		
महिला	श्रीमती एम. सबिता	श्रीमती वाई सुवर्धना
टेबुलटेनीस		
पुरुष सिंगल्स	श्री डी.रविबाबू	श्री ओ. प्रवीण कुमार
पुरुष डबल्स	श्री पी. श्रीनिवास एवं श्री वी.सुरेश	श्री महेश्वर सिंह एवं ओ. प्रवीण कुमार
शटल		
पुरुष सिंगल्स	श्री डी. आर. एस. प्रसन्नाकुमार	श्री नरेश कोन्डूर
पुरुष डबल्स	श्री डी. आर. एस. प्रसन्नाकुमार एवं श्री जी. वी. एम नायडु	श्री एन.बी.स्वामी एवं श्री सय्यद अहमद
महिला सिंगल्स	श्रीमती एम. सबीता	श्रीमती रजिया बेगम
महिला डबल्स	श्रीमती एम. सबीता एवं श्रीमती रजिया बेगम	श्रीमती एम. शैलजा रानी एवं कुमारी रशिला
शाटपुट		
पुरूष	श्री सी. अनिल कुमार	श्री डी. बालराजू
डिस्क थ्रो		
पुरूष	श्री डी. बालराजू	श्री चंद्रपाल
जैवलिन थ्रो		
पुरूष	श्री डी. बालराजू	श्री सी. अनिल कुमार
चेस		
पुरूष	श्री जगन मोहन	श्री डी.बाल राज

लेमन स्पून		
महिला	श्रीमती सी. प्रवीणा	श्रीमती साबेरा
म्यूसिकल चेर		
महिला	श्रीमती साबेरा	श्रीमती श्रद्धा प्रधान
चैनीस चेक्कर		
महिला	कुमारी रशीला	श्रीमती सी. प्रवीणा
क्रिकेट		
पुरुष	विजेता	द्वितीय विजेता
	श्री एम. राकेश (कप्तान) श्री एल. नरेश श्री बी. रवि किरण श्री. मिलिंद कुमार श्री पी. श्रीनिवास श्री सय्यद इदरिस श्री सय्यद अहमद श्री शशि किरण श्री मणिकंठा श्री टी. कासैय्या श्री एम. विजय कुमार	श्री पी. प्रेमकुमार (कप्तान) श्री पी.सी.कोंडैय्या श्री डी. आर.एस. प्रसन्नकुमार श्री जी. वी रंगा राव श्री जी. वी. एम. नायडु श्री. डी. रवि बाबू श्री शेख मस्तान वली श्री महेश्वर सिंह श्री सय्यद मोज़म श्री मो. अली शेख श्री शांति भूषण
वॉलीबॉल		
पुरूष	विजेता	द्वितीय विजेता
	श्री ओ. प्रवीण कुमार श्री डी. रविबाबू श्री एल. नरेश श्री ओंकार स्वामी श्री. मिलिंद कुमार श्री जी. वी.के. मूर्ति श्री अश्फाख अहमद श्री डी. बाल राजू श्री नीलम कुमार	श्री पी.के. प्रसाद श्री बी. रामन श्री पी. श्रीनिवास श्री डी.आर.एस. प्रसन्ना कुमार श्री नरेश कोंडूर, श्री एस. बाबू श्री वी. सुरेश श्री मो. अली शेख श्री ए. शैलेश

टग आफ वार		
महिला	**विजेता**	हरकारा
	श्रीमती एम. शैलजा रानी श्रीमती एम. सबीता श्रीमती श्रद्धा प्रधान श्रीमती कविता श्रीमती कनक लक्ष्मी श्रीमती रजिया बेगम श्रीमती पुल्लम्मा श्रीमती साबेरा	श्रीमती बी. एस.वी. वरलक्ष्मी श्रीमती सी. प्रवीणा श्रीमती एस.के. मीना श्रीमती शैलबाला खंडूरी कुमारी रशिला श्रीमती मरियम्मा श्रीमती बंसती देवी श्रीमती डी. अनुसूया
पुरूष	श्री पी. श्रीनिवास श्री ओंकार स्वामी श्री महेश्वर सिंह श्री एन.शशि किरण श्री मो. अली शेख श्री रमेश बाबू श्री एस. वी. सी. राव श्री एस. के. मीरा वली श्री वी. सुरेश श्री जी. शंकर श्री पी. रवि किरण श्री पी.सी.कोंडैय्या श्री डी.आर.एस. प्रसन्ना कुमार	श्री पी. भास्कर रेड्डी श्री के.वी. पी. रेड्डी श्री जी. वी. मूर्ती श्री नरेश कोंडूरू श्री एम. विजय कुमार श्री एन. श्रीनीवास श्री.शांति भूषण श्री. एन. सदानंद श्री. ई. फिलिप्स श्री सय्यद मोज़म श्री अशफाख अहमद श्री जी.वी.एम. नायडु श्री पी. रविकांत